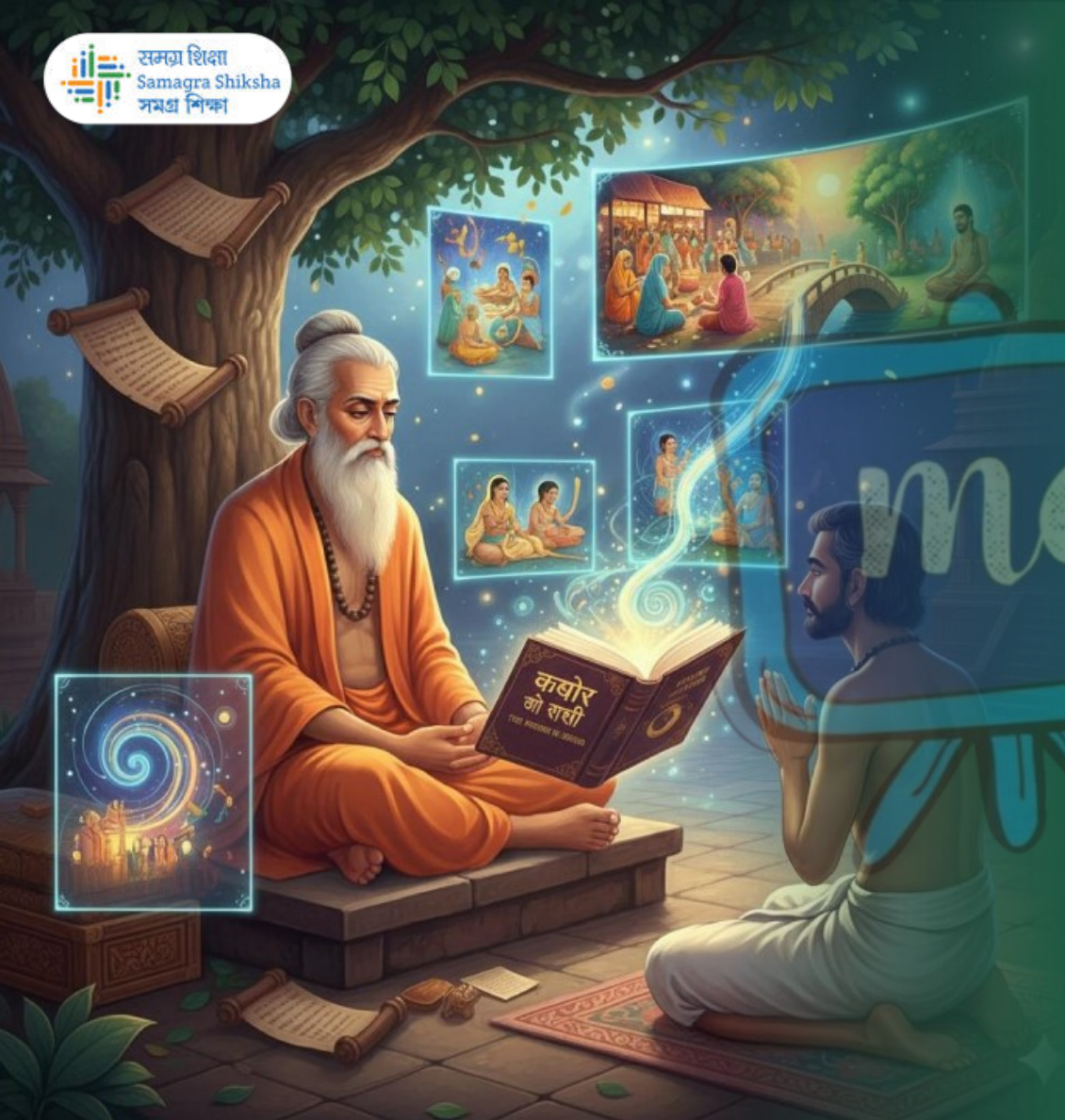


समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 7

साखी

(कबीरदास (1398-1518))

भाग – 2

पल्लवी कलिता

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।6।

मोल – মূল্য

म्यान– তৰোৱাল ৰখা খাপ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

सज्जन, संत या ज्ञानी व्यक्ति से उनकी जाति - धर्म नहीं पूछना चाहिए, बल्कि उनके पास जो ज्ञान हैं, उसे जान लेना चाहिए। जैसे तलवार खरीदते समय हम उसकी धार और गुणवत्ता देखते हैं, न कि उसे रखने वाली म्यान की सुंदरता को | व्यक्ति का मूल्य उसके ज्ञान से होता है, न कि उसकी जाति या धर्म से ।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय ।7।

बुरा– বেয়া
कोय – কোনো এজন
मिलिया– পোৱা
आपना – নিজৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

कवि कहते हैं कि जब वे दूसरों की बुराई, खोजने निकला, तो उन्हें कोई भी बुरा नहीं मिला। जब उन्होंने अपने हृदय में झाँका, तो पाया कि उनसे ज्यादा बुरा और कोई नहीं हैं। इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें दूसरों की बुराई देखने के बजाय अपनी कमियों पर ध्यान देना चाहिए। अगर हर व्यक्ति अपनी कमियों को सुधार लें, तो पूरे समाज का कल्याण हो सकता है।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।

जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ ।8।

ढूँढ़ा – সন্ধান কৰা

पैठ – প্ৰৱেশ

डूबन – ডুবি যোৱা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

लगातार प्रयास करने वाले व्यक्ति को सफलता अवश्य मिलती है। जिस तरह एक मेहनती गोताखोर गहरे पानी में उतरकर मोती ढूँढ़ लाता है, और जो लोग जोखिम से डरते हैं तथा डूबने के डर से किनारे पर ही बैठे रहते हैं, वे मोती नहीं ले सकते। इस तरह देखा जाता है कि गहन साधना एवं कर्म से ही जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है।

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, साँस लेत बिनु प्रान 191

घट	– শৰীৰ
संचरै	– প্ৰবাহিত
जान	– প্ৰাণ
खाल	– ছাল
मसान	– মৰিশালী, শ্মশান

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

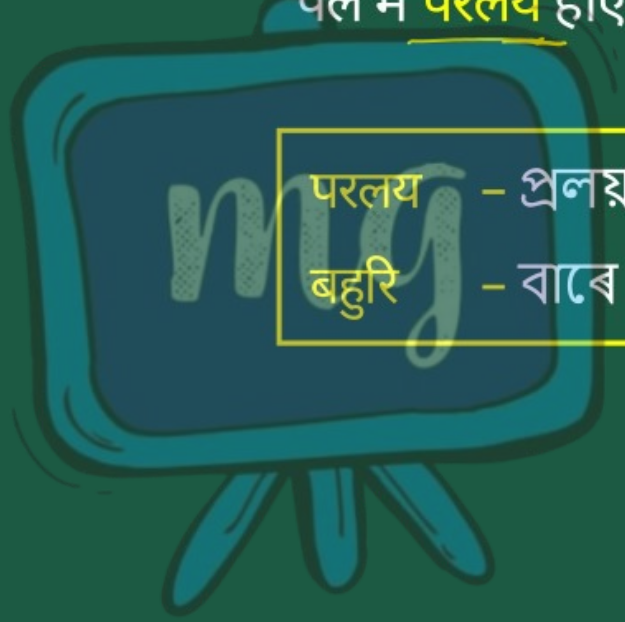
Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

जिस शरीर में प्रेम और भक्ति का संचार नहीं होता, वह मसान (श्मशान) की तरह है। अर्थात् वह श्मशान के समान सूना, मृतप्राय और भयावह होता है। जैसे लोहार की धौंकनी साँस लेने जैसी आवाज करती है, लेकिन उसमें प्राण नहीं होते। प्रेम रहित हृदय केवल शरीर है, उसमें जीवन नहीं होती ।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में परलय होएगा, बहुरि करेगो कब । 10



परलय – প্রলয়

बहुरि – বাৰে বাৰে, পুনৰাই

अर्थ

जो काम कल करना है, उसे आज करो; और जो आज करना है, उसे अभी करो, क्योंकि पल भर में प्रलय (जीवन का अंत या कोई बड़ी विपत्ति) आ सकती है, फिर तुम वो काम कब करोगे? यह दोहा हमें समय का सदुपयोग करने और हर कार्य को तुरंत पूरा करने की प्रेरणा देता है, क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है।

मूल्यांकन



1 | व्यक्ति का मूल्य किससे तय होता है ?

क उसकी जाति से

ख उसके धर्म से

ग उसके ज्ञान से

मूल्यांकन



2 | पल में क्या हो सकता है ?



मूल्यांकन



3 यदि हर व्यक्ति अपनी कमियों को सुधार ले, तो क्या होगा ?

क ✓ समाज का कल्याण होगा

ख समाज बर्बाद होगा

ग कोई बदलाव नहीं होगा